IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, December 2023

पर्यावरण संरक्षण में आदिवासियों की भूमिका (सीधी जिले के विशेष संदर्भ में)

Preeti Satyanami[1] and Dr. Madhulika Shrivastav[2]
Research Scholar, Department of Sociology[1]
Professor, Department of Sociology[2]
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, Madhya Pradesh, India

सारांश :-

पर्यावरण एवं समाज एक दूसरे से संबंधित हैं।वास्तव में पर्यावरण तथा समाज परस्पर संबंधित(एक दूसरे पर निर्भर) है।जनजाति समुदाय दुनिया भर में पारिस्थितिक तंत्र के रखरखाव में अपरिहार्य ताकत रहे है. भारतीय जनजातियों ने खेती, मछली पकड़ने और वन्यजीवों के साथ रहने की जगहों में स्थाई प्रतिमा प्राकृतिक आवासों को संरक्षित करने और संरक्षण को बढ़ावा देने में मदद की है । आदिवासी लोग और जैव विविधता एक दूसरे के पूरक हैं लोग जंगल से उतना ही लेते हैं इतनी उन्हें जरूरत होती है जबकि जनजाति लोग जंगल के बीच रहते हैं जो जंगल में नंगे पैर चलते हैं तथा यह उनका प्रकृति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने का तरीका है ।

मुख्य शब्द :- पर्यावरण, आदिवासी, सरंक्षण एवं भूमिका ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एल्विन बी (1939) द बैगा जॉनमुर्रे लन्दन।
2. बघेल डी. एस. (1990) भारतीय सामाजिक समस्याऐं, पुष्पराज प्रकशन रीवा।
3. तिवारी शिव कुमार (1998) म.प्र. के आदिवासी म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
4. उव्रेती एज.सी. (1970) भारतीय जनजातियां ओरिएंटल प्रकाशन।
5.पटेल जी. पी. (1991) बैगा जनजाति का मानवशास्त्रीय अध्ययन।
6. डेविस किंग्सले (1973) मानव समाज किताब महल इलाहाबाद।
7. ग्रीन ए. डब्ल्यू. सोसियोलॉजी।